एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कमरख की खेती: व्यावसायिक बागवानी और प्रजनन विधियाँ

(*धनेश्वा कुमारी गुर्जर एवं हिमांशु चावला)
फल विज्ञान विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: dhansugurjar99@gmail.com

आजकल मनुष्य कुछ ऐसे फलों की तलाश कर रहा है जो प्रचूर पोषक तत्वों के साथ औषधीय गुणों से भी परिपूर्ण हों। इसमें कमरख विशेष स्थान रखता है। वर्तमान समय में व्यवस्थित एवं लाभकारी बागवानी के लिए कमरख की कोई प्रमाणिक प्रजाति उपलब्ध नहीं है इसलिए व्यवसायिक बागवानी हेतू उत्तम प्रभेदों का विकास आवश्यक है। इस दिशा में इसकी उपलब्ध विविध अनुवांशिक द्रव्यों का उपयोग प्रजनन कार्यक्रम में करके सफलता हासिल की जा सकती है।

कमरख खट्टा, मीठा स्वाद वाला फल है। जो बच्चों को अधिक लोकप्रिय है। इसको स्टारफल भी कहते हैं। इसकी कुछ मीठी किस्में भी पायी जाती हैं। इसके फल चटनी बनाने तना जूस के रुप में प्रयोग किये जाते हैं। कमरख आक्सलीडेसी पौध परिवार का सदस्य वनस्पति शास्त्री इसे एवरहोवा कैरमबोला कहते हैं। इसका जन्म स्थान इण्डोनेशिया तथा मलेशिया माना जाता है। विश्व के उष्ण कटिबंधय क्षेत्रों में उगने वाला यह एक महत्वपूर्ण फलवृक्ष है। भारत में यह उत्तर प्रदेश, आसाम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, बिहार, तमिलनाडू के पठारी क्षेत्रों में उगने वाला यह एक महत्वपूर्ण फलवृक्ष है। भारत में यह उत्तर-प्रदेश, आसाम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, बिहार, तमिलनाडू के पठारी क्षेत्रो के अलावा अन्य उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में भी उगाया जाता है। इसके हरे-भरे वृक्ष औसत उँचाई के होते हैं। जिनकी उँचाई 6.5 से 10 मीटर तक होती है। कमरख के फलों में अवकारक शर्करा एवं विटामिन-सी के अतिरिक्त पोटैशियम, मैगनिशयम, कैल्शियम एवं फास्फोरस जैसे खानिज तत्व पाये जाते हैं। इसके फलों से उच्च कोटि की जेली, चटनी तथा सलाद बनायी जाता है। फल खट्टे होते हैं अतः इन्हें शर्बत में संरक्षित करने वाला रसायन के रुप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसको दवा के रूप में वबासीर के निवारण में प्रयोग किया जाता है।

जलवायु तथा भूमि- कमरख के पौधों को विभिन्न जलवायु में उगाया जा सकता है। इस फल की व्यावसायिक बागवानी नीलगिरी की पहाड़ियो पर 1200 मीटर की उँचाई पर सफलता पूर्वक की जाती है। उत्तर भारत में इसके एक-दो वृक्ष ही कही कही पाये जाते है। कमरख आर्द और उष्ण जलवायु का पौधा है। इसकी सफल खेती हेतू उष्ण एवं आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। शरद् ऋतु में पाले का पौधों की वृद्धि पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इसके लिए दोमट मिट्टी सर्वोतम होती है। भूमि में पानी का निकास अच्छा होना चाहिए।

पौध प्रवर्धन तथा उन्नत किस्में- कमरख एक अत्यन्त उपयोगी फल है जिसे अभी तक केवल इनके बीजों से हीं उगाया जाता है। बीज जनित पौध तैयार होने एवं पर-परागण के कारण इनमें काफी विभिन्नताएँ आ गई है जिनका उपयोग कर अधिक पैदावार देने वाले वृक्षों के विकास की प्रबल संभावनाएँ है। कमरख की किस्मों को बीज द्वारा प्रवार्धित किया जाता है। कायिक विधियों में भेंट कलम, बंधान, गुटी, ढाल एवं पैबन्दी चश्मा द्वारा भी सफलतापूर्वक इसका प्रवर्धन किया जा सकता है। वाराणसी एवं आसपास के क्षेत्रों में

किये गये सर्वक्षणों में पाया गाया है कि इनके आनुवंशिक गुणों में विविधता के कारण फलों के आकार कभी गोलाकार, अंडाकार, शंकुलाकार या बेलाकार हो जाता है। फलों के उपरी छोर किसी में चपटा, अन्दर दबा हुआ या नुकीले आकार में मिलते हैं। छिलकों का रंग हल्का, पीला, नांरगी या हरें रंग के होते हैं। फलों का वनज 36.6 से 109 ग्राम, मोटाई 3 से 6.5 से०मी० तथा लंबाई 3.5 से 7.52 सें०मी० मापी गयी है। प्रतिफल बीज की संख्या 1.2 से 9.0, रेशा 0.22 से 1.02 एस्कार्बिक अम्ल 6.98 से 16.98 मि० ग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है। जबकि जूस की मात्रा 55 से 85 प्रतिशत एवं भंडारण क्षमता 11 से 16 दिन होती है।

पौध रोपण- इसके पौधों को भूमि की दशानुसार 8-10 मीटर की दूरी पर लगाते हैं। पौधों की रोपाई जुलाई-अगस्त में करते हैं। इसके हरे-भरे वृक्ष औसत उँचाई के होते हैं, जिनकी उँचाई 6.50 से 10 मीटर तक होती है। इसके पौधों के उचित विकास के लिए प्रति पौध 25 किलो केचुआ की खाद +500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट +400 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटाश +250 ग्राम यूरिया देना चाहिए।

उपज- कमरख के फल जब हरे से पीले होने लगते हैं तथा गुदा मुलायम हो जाये तो परिपक्व समझना चाहिये। एक पूर्ण विकसित पेड़ से 80-100 किलोग्राम तक फल प्राप्त होते हैं।